आमोद कारखानिस

मेरी डायरी से...

यह है वेलास। महाराष्ट्र के पश्चिमी तटीय क्षेत्र में एक छोटा-सा गाँव। मुम्बई जैसे महानगरों से सैंकड़ों मील दूर प्राकृतिक सुन्दरता के बीच। कल तक कौन इसे जानता था? लेकिन पिछले कुछ सालों में यहाँ कुछ ऐसा हुआ कि हम खुद को यहाँ आने से रोक न सके।

हम भाऊ काद्दरे से मिले...

उन दिनों हर शनिवार को ऑफिस से छूटते ही मैं और मेरा दोस्त मोटर साइकिल से वेलास की ओर चल देते। ऊबड़खाबड़ रास्ते पर लगभग सौ किलोमीटर का सफर तय कर हम वेलास पहुँचते। तब तक काफी रात हो चुकी होती, इसलिए हम समुद्र किनारे ही ठहर जाते। ठहरते, पर सोते नहीं थे। रात भर एक से दूसरे सिरे तक घूमते रहते, खोजते रहते। हफ्तों तक यह सिलसिला चलता रहा। एक रात मैं हमेशा की तरह धीमे-धीमे चल रहा था। अचानक समुद्र में एक बड़ा पत्थर-सा दिखा।

लगा कोई चीज़ लहरों के साथ बह आई है। मैं चौकन्ना-सा वहीं खड़ा रहा। कुछ देर तक कुछ नहीं हुआ। और फिर... फिर वह पत्थर हिलने लगा। नहीं, वह कोई भूत नहीं था। वह था एक बड़ा समुद्री कछुआ। एक मादा जो समुद्र से निकलकर ज़मीन पर अण्डे देने आई थी। वह शायद सौ किलो से भी ज़्यादा वज़न की रही होगी! वह धीरे-धीरे पानी से बाहर आई। रेत पर कुछ आगे बढ़ी और रुक गई। फिर उसने खुदाई शुरू की। मुझे ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था पर वह शायद अपने अगले दो पैरों से खोद रही थी और पिछले पैरों से रेत पीछे ढकेल रही थी। जब गड्ढा करीबन एक मीटर गहरा हो गया तो वह रुक गई। गड्ढे के किनारे बैठकर उसने अण्डे देने शुरू किए।

करीबन एक घण्टे बाद उसका काम पूरा हुआ और वह

अण्डों का पहाड़ या अण्डा-पहाड़

ऑलिव रिड्ले

गड्ढे में फिर से रेत डालने लगी। अजीब बात यह कि गड्ढा भर जाने के बाद वह उस पर नाचने लगी। उस बेढंगे से नाच से गड्ढे पर पड़ी रेत अच्छी तरह दब गई। अपना काम खत्म कर वह वापस समुद्र की ओर चल दी।

यह समुद्री कछुआ ऑलिव रिड्ले नाम से जाना जाता है। ऑलिव रिड्ले उड़ीसा के गहिरमाथा तट पर बड़े पैमाने पर अण्डे देते हैं। भारत के पश्चिमी समुद्री किनारे पर भी कुछ कछुए अण्डे देते हैं। वेलास का समद्र तट एक ऐसी ही जगह है। ये कछुए हमेशा समुद्र में रहते हैं। सिर्फ मादाएँ अण्डे देने के लिए साल में एक बार किनारे पर आती हैं। रेत में अण्डे देकर वे वापस समुद्र में चली जाती हैं। करीबन 55 दिनों बाद अण्डों में से बच्चे निकलते हैं।

कछुए के पैरों के निशान

मार्च 16

भाऊ की कहानी से हम सब बहुत प्रभावित थे। पश्चिमी किनारे पर मादा कछुए को अण्डे देते हुए देखना एक ज़बर्दस्त घटना थी। बड़ी सुबह हम समुद्र किनारे पहुँच गए। एक छोर से दूसरे छोर तक 3-4 मील चले। तभी रेत पर हमें निशान दिखे।

यह क्या हो सकता है? क्या यहाँ रेत में कोई छोटा ट्रेक्टर चला रहा था?

नहीं भाई। ये थे समुद्री कछुए के निशान। निशानों का पीछा करते हुए हम रेत के किनारे तक पहुँचे। यहाँ सैण्ड बाइंडर नाम की बेल ज़मीन पर फैला थी। इस जगह से वापस समुद्र की ओर जाते हुए वैसे ही निशान दिखे। हाँ गड्ढे का कहीं नामोंनिशान ना था।

हम गाँव गए और भाऊ के साथ अन्य लोगों को ले आए। हमें विश्वास था कि कछुओं के संरक्षण में लगे ये लोग ज़रूर पहचान लेंगे कि मादा ने अण्डे दिए हैं या नहीं। वे बोले, "कल तो देर रात तक हम यहीं थे। हो सकता है हमारे शोरगुल के कारण मादा कहीं छिपके बैठ गई हो और हमारे जाने के बाद अण्डे देकर चली गई हो। खैर मादा को देखने का एक मौका छूट गया।"

वेलास एक बहुत सुन्दर शान्त और साफ सुथरा तट है। शायद पर्यटकों से बचे होने के कारण यह प्रदूषण से बचा हुआ है। रेत पर थोड़ा गौर करेंगे तो कई तरह के जीव-जन्तु नज़र आ जाएँगे। कई सारे आकार के केंकड़े जिनकी रंगत रेत से बहुत मिलती है। इसके आगे, ऊपर की ओर निकले एंटिना में इसकी आँखें हैं।

मिली कछुए की आँखें

अण्डे सुरक्षित तो कछुए सुरक्षित

मार्च 17

भाऊ और उनके साथी समुद्री कछुओं को बचाने के लिए पिछले चार सालों से काम कर रहे हैं। समुद्री कछुओं की लगातार घटती संख्या के दो प्रमुख कारण हैं। एक पर्यटन या मनुष्य की आवाजाही बढ़ने से अण्डे देने लायक तटों का कम होना। दूसरी समस्या है, कछुओं के अण्डों की चोरी और व्यापार। शायद कछुओं का अण्डा अच्छा व्यंजन माना जाता है। जैसे ही मादा अण्डे देकर जाती है लोग ढूँढकर उन्हें निकाल लेते हैं। भाऊ और उनके दोस्तों के सहयोग से वेलास के समुद्री किनारे का नाम समुद्री कछुओं के प्रजनन क्षेत्र के रूप में संसार के नक्शे में दर्ज हुआ है।

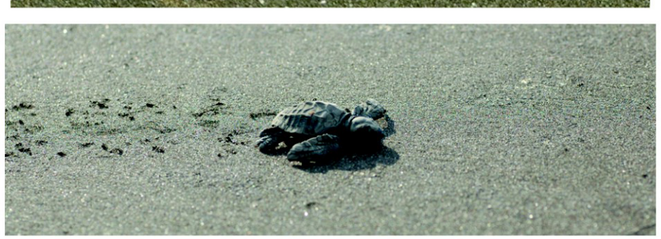

अचानक रेत में कुछ हलचल हुई और एक बच्चा बाहर झाँकने लगा। धीरे-धीरे कई सारे बच्चे बाहर निकल आए। बच्चे ज़्यादातर सुबह या शाम के समय ही बाहर आते हैं। और आते ही वे समुद्र की तरफ चलने (या दौड़ने) लगते हैं। जाने कैसे उन्हें पता चल जाता है कि समुद्र किस तरफ है। ये बहुत ही छोटे होते हैं – तुम्हारी बन्द मुट्ठी जितने। अण्डों से निकलते ही बच्चों का चल पड़ना कोई बच्चों का खेल नहीं है। इंसान के बच्चे तो पैदा होते ही अपने आप मुड़ भी नहीं सकते। माँ-पिता की देखभाल और लाड़-प्यार में लगभग दो साल गुज़ारने के बाद वे पहला कदम उठा पाते हैं। और यहाँ इस नन्हे-से कछुए को बाहर आते ही रेत पर कम से कम 200-300 मीटर चलकर पानी तक पहुँचना है।

पूरे तट पर अण्डों की देखरेख मुश्किल है। इसलिए भाऊ और उनके साथी अण्डों को निकालकर किसी सुरक्षित जगह पर गाड़ देते हैं। इस तरह उन्होंने 34 मादाओं के अण्डों को बचाया है। आज उनमें से एक गड्ढे से बच्चे निकलने की उम्मीद है।

बाहर आए सभी नन्हे कछुओं ने चलना शुरू किया। वे कुछ फीट चलते, थक जाते, थोड़ी देर रुकते, गर्दन और आगे के पैर उठाकर इधर-उधर देखते और फिर चल पड़ते।

बस मंज़िल आई ही समझो।

आज ये सुरक्षित हैं इसलिए सकुशल समुद्र तक पहुँच जाएँगे। वरना घर से समुद्र तक के रास्ते में इनके लिए जोखिम कम नहीं हैं – लोमड़ी, कुत्ते, चील जैसे शिकारी मौके का फायदा उठाने की ताक में रहते हैं।

अरे, यह क्या हुआ! यह बच्चा इस तरफ मुड़कर कहाँ जा रहा है – अरे भई इधर नहीं समुद्र उस तरफ है। कहीं यह मेरे कैमरे के फ्लैश से तो भ्रमित नहीं हुआ! थोड़ी दूर से देखना बेहतर होगा। ठीक पता नहीं पर विशेषज्ञों का मानना है कि बाहर आते ही बच्चे प्रकाश की तरफ आकर्षित होते हैं। ठीक है अब वो रुककर मुड़ गया है। हाँ, अब सही दिशा है। अब तो पानी के पास आ चुका है।

पानी तक पहुँचते ही बच्चों ने तैरना शुरू किया। परन्तु समुद्र की लहरों की ताकत उन छोटे-छोटे पैरों के लिए बहुत भारी थी। एक आती लहर ने उन्हें अपने साथ पीछे धकेल दिया। जैसे ही लहर गई बच्चे ने फिर चलना शुरू किया, अगली लहर से धक्का खाने के लिए। गीली रेत पर चलना मुश्किल हो रहा है। रेत उन पर चिपक रही है। थककर बच्चे रुक जाते हैं कि तभी एक लहर ने उन्हें पीछे धकेल दिया। कोई बात नहीं कुछ तो आगे बढ़े।

अबकी एक बड़ी लहर आई। लेकिन इस बार बच्चे ने खुद को रेत में धँसा कर सम्भाल लिया। पानी को ऊपर से निकल जाने दिया। जब लहर गई तो पूरी ताकत के साथ फिर तैरना शुरू किया। यहाँ पानी ज़्यादा है। लहरों की झाग के बीच मुझे वो तैरता हुआ बच्चा धुँधला-सा दिखाई दिया। वह निकल चुका है दूर समन्दर में। अलविदा बच्चे! उम्मीद करते हैं तुम लम्बा जिओगे और एक दिन इसी जगह अण्डे देने फिर आओगे। उस दिन भी हम तुम्हें मिलेंगे। इस जगह को तुम्हारे लिए बचाए रखेंगे। अलविदा!!!

सभी फोटोः आमोद कारखानिस

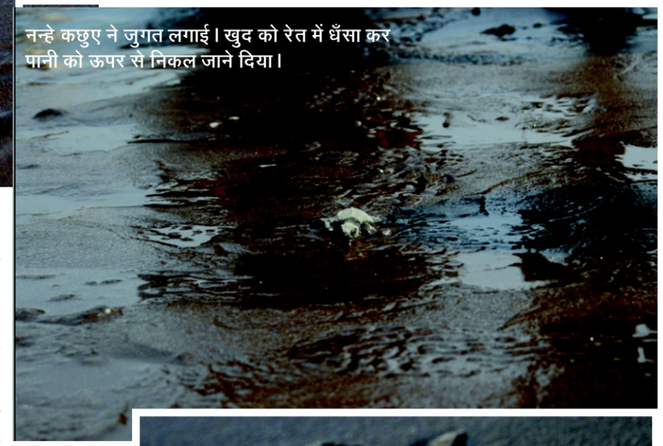

नन्हे कछुए ने जुगत लगाई। खुद को रेत में धँसा कर पानी को ऊपर से निकल जाने दिया।

लहर के जाते ही फिर चलना शुरू हुआ।

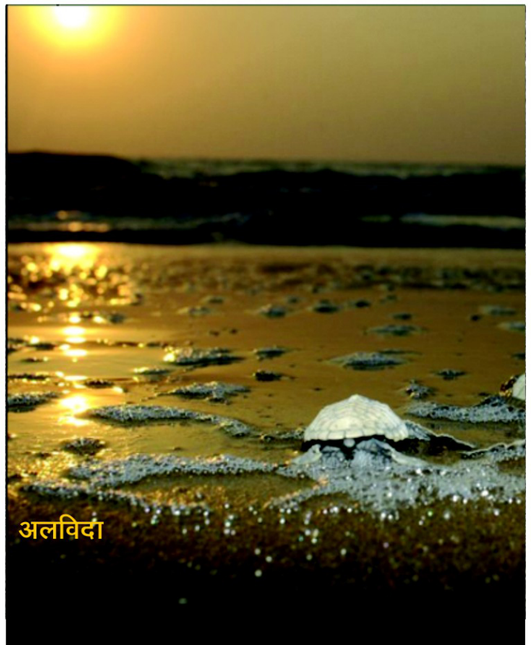

अलविदा